# आधुनिक पशुपालन

पशुपालन से अपने आर्थिक स्तर को सुधारने एवं सामाजिक स्तर को ऊँपर उठाने के लिए किसान भाइयों को, पशुओं के नस्ल सुधार, अच्छे प्रबंधन, उचित रख–रखाव तथा रोग निरोधक विषयों का आधुनिक ज्ञान रखना अति आवश्यक है। इस प्रतिस्पर्धा के युग में अपनी आर्थिक स्थिति को और मजबूत बनाने के लिए दुग्ध व्यवसाय एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इस उद्योग से वर्षभर रोजगार मिलने की पूरी संभावना बनी रहती है।

हमारे देश में मुख्यतः दुग्ध उत्पादन व्यवसाय भूमिहीन मजदूर, सीमान्त किसान एवं अन्य गरीब तथा अनभिज्ञ तबके के पशुपालकों द्वारा किया जाता है, जिसके फलस्वरूप उन्हें वांछित लाभ नहीं मिल पाता है, जिन्हें अच्छे व्यवहारिक प्रशिक्षण और आधुनिक तकनीकियों की नितांत आवश्यकता निर्विवाद रूप से है।

**भारतीय नस्ल की गायः**

**साहीवालः**

गृह स्थानः पाकिस्तान के माउंगोभरी जिला जो आजकल साहीवाल जिला कहलाता है।
प्रथम ब्यांत की उम्रः 30–36 माह।
दुग्ध उत्पादन क्षमताः 2200 लीटर प्रति ब्यांत।

**लाल सिन्धीः**

गृह स्थानः पाकिस्तान का करांची एवं हैदराबाद जिला।
प्रथम ब्यांत की उम्रः 42 माह।
दुग्ध उत्पादन क्षमताः 2000 लीटर प्रति ब्यांत।
ब्यांत का अन्तरालः 13–14 माह।

**गीरः**

गृह स्थानः गीर पहाड़ एवं गुजरात के जंगलों में तथा काठियावाड़ एवं बड़ौदा क्षेत्रों में।
प्रथम ब्यांत की उम्रः 47 माह।
दुग्ध उत्पादन क्षमताः 1700 लीटर प्रति ब्यांत।

**देवनीः**

गृह स्थानः हैदराबाद के उत्तर पश्चिम भाग।
प्रथम ब्यांत की उम्रः 53 माह।
दुग्ध उत्पादन क्षमताः 1250 लीटर प्रति ब्यांत।

**विदेशी नस्ल की गायः** में होल्सटीन, फ्रीजियन, जर्सी एवं ब्राउन स्विस हमारे देश की जलवायु में अभ्यस्त हो गई है।

**होल्सटीन फ्रिजियन**

गृह स्थानः हालैंड, नीदरलैंड के उत्तरी प्रांतों में।
प्रथम ब्यांत की उम्रः 28–30 माह।
दुग्ध उत्पादन क्षमताः 6000–9000 लीटर प्रति ब्यांत।

**जर्सीः**

गृह स्थानः इंगलिश चैनल में जर्सी टापू।।
प्रथम ब्यांत की उम्रः 24–26 माह।
दुग्ध उत्पादन क्षमताः 4000 लीटर प्रति ब्यांत।

**भारत में उत्पन्न किये गये शंकर नस्लः**

1. **करन–स्विसः** साहीवाल गाय को ब्राउन स्विस के साथ प्रजनन कराकर। इनकी दूध उत्पादन प्रति ब्यांत 3600 लीटर है।
2. **करन–फ्राइजः** थरपारकर नस्ल की गाय को होलस्टीन फ्रीजियर नस्ल के सांड़ से प्रजनन कराकर। इनकी दूध उत्पादन प्रति ब्यांत 3200 लीटर है।

3. **जर–सिन्धः** सिन्धी नस्ल की गाय को जर्सी नस्ल के सांड़ से प्रजनन कराकर। इनकी दूध उत्पादन प्रति ब्यांत 3500–4500 लीटर है। यह तीनों नस्ल राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान करनाल (हरियाणा) में किये हैं।
4. **व्रिनदावनी नस्लः** होल्सटीन फ्रिजियन/ब्राउन स्विस/जर्सी को हरियाणा नस्ल गाय से प्रजनन कराकर। इनकी दूध उत्पादन 305 दिन के ब्यांत में 3047–3219 लीटर है। यह नस्ल आई0भी0आर0आई0 द्वारा 2006 में तैयार की गयी।

**भैंस की प्रमुख नस्लें:**

1. **मुर्रा या देलहीः**
   गृह स्थानः दिल्ली राज्य एवं पंजाब का दक्षिणी भाग।
   दुग्ध उत्पादन क्षमताः 6–8 लीटर प्रति दिन।
   एक ब्यांत में 4536 लीटर औसत तक दूध।
2. **भदावरी या इटावाः**
   गृह स्थानः आगरा जिले के भदावरी स्थान, ग्वालियर, इटावा।
   दुग्ध उत्पादन क्षमताः 6–8 लीटर प्रति दिन, परन्तु दूध में धी अधिक (13 प्रतिशत तक)
3. **जाफराबादी या भावनरीः**
   गृह स्थानः दक्षिणी काठियावाड़ तथा जफराबाद का निकटवर्ती क्षेत्र, गिर के जंगल।
   दुग्ध उत्पादन क्षमताः औसतन 11.24 लीटर प्रतिदिन।
4. **नीली रावीः**
   गृह स्थानः पंजाब की सतलज घाटी फिरोजपुर में माण्टगोमरी जिले।
   दुग्ध उत्पादन क्षमताः औसतन एंक ब्यांत में 1781 लीटर दूध और दूध में चिकनाई प्रतिशत 10 प्रतिशत से अधिक।
5. **सूरती नस्लः**
   गृह स्थानः गुजरात, बड़ौदा, आनन्द नाडियाद।
   दुग्ध उत्पादन क्षमताः 1587 लीटर 300 दिन के सामान्य ब्यांत में एवं चिकनाई 7.5 प्रतिशत तक।
6. **मेहसाना नस्लः**
   गृह स्थानः उत्तर गुजरात के मेहसाना जिले, पाटन, सिद्धपुर, बीजापुर, बाड़ी, कैल तथा राधनपुर जिले में, भैंस दुग्ध उत्पादन के लिए श्रष्ठा, इसका सुखे रहने का समय कम।
   दुग्ध उत्पादन क्षमताः 1350 लीटर से 1800 लीटर 300 दिन के ब्यांत में।

**पशुशाला का निर्माणः**

पशुशाला अपने निकटवर्ती भूतल से अधिक ऊँचे स्थल बनाना चाहिए एवं भवन का निर्माण सस्ते और इसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर हो।

**विभिन्न गृह एवं अनुशंसित स्थानः**

(क) गाय खटाल 20–30 वर्ग फुट प्रति गाय।
(ख) प्रसूति गृह 100–150 वर्ग फुट/प्रति गाय।
(ग) बीमार पशुओं के लिये एक अलग कमरा 150 वर्ग फुट का।
(घ) छोटे बछड़ों के लिए (3 माह से कम उम्र वाले) गृहः 20–25 वर्ग फुट प्रति बछड़ा।
(ड.) मध्यम उम्र वाले वत्स गृह (3–6 माह): 25–30 वर्ग फुट प्रति बछड़ा।
(च) वयस्क वत्स गृह (6 से 1 वर्ष) : 30–40 वर्ग फुट प्रति बछड़ा।

**गोशाला भवन निर्माण हेतु निम्नांकित प्रमाणित मापदंड हैं:**

| विभिन्न बनावट | एक पंक्ति वाली व्यवस्था वाले भवन में | दो पंक्तियों में आमने–सामने मुंह वाली व्यवस्था वाले भवन में | दो पंक्तियों में आमने–सामने पूंछवाली व्यवस्था वाले भवन में |
|---|---|---|---|
| चारा डालने का मार्ग | 3.5 फुट | 5.0 फुट | 3.5 फुट |
| नाद की चौड़ाई | 2.5 फुट | 2.5 फुट | 2.5 फुट |
| खड़ा रहने का स्थान | 5.0 फुट | 5.0 फुट | 5.0 फुट |
| गोबर एवं मूत्र की नाली की चौड़ाई | 1.5 फुट | 1.5 फुट | 1.5 फुट |
| गोबर उठाने एवं दूध दुहाई हेतु स्थान की चौड़ाई | 5.0 फुट | 5.0 फुट | 7.0 फुट केन्द्रीय मार्ग |
| भवन की कुल चौड़ाई (भीतर भीतर) | 17.5 फुट | 33.0 फुट | 32.0 फुट |
| पूरे भवन की लम्बाई (भीतर भीतर) | 40 फुट 10 गायों के लिए, 102 फुट 50 गायों के लिए (भीतर भीतर) | | |

**पशु पोषण:**

1. पशु का आहार पौष्टिक, मुलायम, रूचिकर एवं स्वच्छ पदार्थो का बना होना चाहिए।
2. जहाँ तक संभव हो, पशुओं को दाना एवं बिनौला आदि भिंगोकर दिये जाएँ।
3. चारे के डंठल और जड़ों को चारे की मशीन से काटकर उपयोग में लाना चाहिए, इससे चारे में 30–40 प्रतिशत तक की बचत हो जाती है।
4. दूघ देने वाली गायों को उनके उत्पादन के अनुसार आहार और राशन की व्यवस्था करनी चाहिए। दुग्ध उत्पादन में प्रोटीन का बहुत महत्व है, क्योंकि प्रोटीन दूध का ही एक अंग है। प्रोटीन की प्राप्ति अरहर, चना, मटर, लोबिया, सोयाबीन, उड़द, मूँग, मसूर आदि दालों वाली फसलों से होती है।
5. पशु को जो आहार दिया जाय वह संतुलित तथा नियमित हो उसे दिन में दो बार चारा–दाना 8–10 घंटे के अन्तराल पर देना उचित होता है, जिससे पशु की पाचनक्रिया ठीक रहती है और बीच में जुगाली/पगुरी करने का समय मिल जाता है।
6. गर्भित पशु एवं दूध देने वाले पशु को 2–5 कि0ग्रा0 तक प्रतिदिन हरा चारा अवश्य देना चाहिए।
7. प्रत्येक गाय को किसान भाई उनके प्रति 100 कि0ग्रा0 शरीर भार पर 2–2.5 कि0ग्रा0 शुष्क पदार्थ देना चाहिए। भैंसों को 3 कि0ग्रा0 प्रति 100 कि0ग्रा0 शरीर भार पर।
8. एक गाय को लगभग 60 ग्राम नमक प्रतिदिन देना चाहिए एवं 30 ग्राम अस्थिचूर्ण या 60 ग्राम खड़िया मिलनी चाहिए।
9. चारे में 1/2 भाग हरा चारा और 2/3 भाग सूखा चारा होना चाहिए। जो पशु चरने नहीं जाते हो उन्हें दिये जाने वाले भोजन में 2/3 भाग शुष्क पदार्थ का 1/3 भाग हरे चारे या साइलेज से पूरा करना चाहिए। यदि हरा चारा फलीदार हो तो यह मात्रा 1/2 होनी चाहिए।
10. पशुओं को भोजन में शुष्क/सूखे चारे की मात्रा 500 कि0ग्रा0 के शरीर भार तक 2.5 प्रतिशत अर्थात् 100 कि0ग्रा0 शरीर भार पर 2.5 कि0ग्रा0 ड्राई मैटर देना होता है। और अगर पशु का शरीर भार 500 कि0ग्रा0 से अधिक होने पर, उसे 3 कि0ग्रा0 ड्राई मैटर देना चाहिए।
11. छोटे बछड़ों/बछियों को 100 कि0ग्रा0 शरीर भार पर 2 कि0ग्रा0 ड्राई मैटर देना होता है।
12. भोजन में दाना कि मात्रा उनके जीवन–यापन हेतु बछड़ा, बछिया तथा देशी गायों को 1 कि0ग्रा0 प्रतिदिन एवं शंकर गाय, बैल और भैंस को 1.5 कि0ग्रा0 प्रतिदिन के हिसाब से देना होता है। उसके बाद पशुओं की आवश्यकता के आधार पर दाना देते हैं।
13. उत्पादन दाना इसमें गाय के दूध उत्पादन पर 3 लीटर दूध पर प्रतिदिन 1 कि0ग्रा0 दाना और भैंसों को 2.5 लीटर दूध पर 1 कि0ग्रा0 दाना दिया जाता है।

14. जो पशु हल्का कार्य मतलब प्रतिदिन 4 घंटे तक कार्य करते हों उन बैलों को 1कि0ग्रा0 दाना। जो मध्यम कार्य (मतलब 4–6 घंटे तक) उन्हें 1.5 कि0ग्रा0 दाना तथा जो भारी कार्य करने वाले मतलब 6–8 घंटे तक बैलों को 2 कि0ग्रा0 दाना प्रतिदिन के हिसाब से जीवन–यापन करने वाले दाना में जोड़कर दाना दिया जाना चाहिए।

15. जो पशु गर्भित हो उन्हें भ्रूण विकास हेतु दाना 6 माह या इससे अधिक अवधि की गर्भवती देशी गाय को 1 कि0ग्रा0 दाना तथा भैंस को 1.5 कि0ग्रा0 प्रतिदिन भ्रूण विकास हेतु उनके जीवनयापन हेतु दिये जाने वाले दाने में जोड़कर दिया जाना चाहिए।

16. सूखे व हरे चारे की मात्रा में एक अनुपात दो और रसीले चारे खिलाने पर एक व तीन का अनुपात रखना चाहिए।

17. हे से 90 प्रतिशत ड्राई मैटर तथा हरे चारे से 30 प्रतिशत ड्राई मैटर प्राप्त होता है एवं रसीले चारे तथा बरसीम, मटर जैसे चारो से 20–25 प्रतिशत ड्राई मैटर प्राप्त होता है।

18. पशुओं द्वारा खाये जाने वाले चारे की मात्रा उसके शरीर भार तथा दुग्ध उत्पादन/कार्यक्षमता पर निर्भर करती है। बच्चों एवं वयस्क पशुओं को हरे तथा सूखे चारे, पौष्टिक मिश्रण, नमक तथा खनिज मिश्रण और दाने से बनाये गये आहार के घटकों की विभिन्न अनुपातों में आवश्यकता होती है।

19. आमतौर पर 450 कि0ग्रा0 वजन वाले पशु को प्रतिदिन 3 कि0ग्रा0 प्रोटीन, 2.5 कि0ग्रा0 स्टार्च तथा 3–4 कि0ग्रा0 पचनशील तत्वों की आवश्यकता होती है।

20. बछड़ों के ब्याने के प्रथम 3 दिन तक खीस जरूर पिलाना चाहिए। खीस में विटामिन ''ए'' तथा एण्टीबॉडीज होता है जिससे बच्चों की संक्रमित बीमारियों से रक्षा होती है। 1–2 माह तक के बछड़े को उसके शरीर भार का 10वाँ भाग की मात्रा दिन भर में बार–बार पिलाना चाहिए।

21. यदि बच्चे को खीस उपलब्ध न हो तो 1/2 चम्मच अण्डी का तेल, एक कच्चा अण्डा, गरम दूध में मिलाकर पहले 3 दिन तक दें, इसे दिन में 3 बार नित्य दें सकते हैं।

## पशुओं में होने वाले प्रमुख जीवाणु जनित बीमारीः

1. **गलाघोंटू या डकहा (H.S.):**

**पहचानः** तेज ज्वार, मुँह और गले पर शोथ वाली सूजन तेज ज्वार (106-107°F), मुँह और गले पर शोथ वाली सूजन होती है। आमाशय और आंत में पीड़ा होती है, जिससे पशु का पेट फूल जाता है और पतला दस्त आता है। मुँह से लार और नाक से गाढ़ा स्राव निकलता है। श्वास में कठिनाई एवं घड़–घड़ की आवाज आती है। प्रायः यह रोग वर्षाकाल में होता है। रोग के तुरन्त पहचान और उचित उपचार के अभाव में पशु की मृत्यु 10–12 घंटे में ही हो जाती है। यह रोग गाय, भैंस, भेड़ एवं बकरी में होता है, विशेषकर काले धन (भैंस) पर हमला ज्यादा करता है।

**बचाव एवं उपचारः** रोगग्रस्त पशुओं को अन्य पशुओं से अलग रखें। स्वस्थ पशुओं को बरसात शुरू होने के पहले इस रोग का टीका एच0एस0 वैक्सीन लगवा लेना चाहिए इससे 6 माह तक रोग रोकने की शक्ति आ जाती है।

इस दौरान पशु को खाने में जौ का दलिया एवं गुनगुना पानी पिलाना चाहिए। रोग ठीक होने पर पशु को एकाएक चारा/घास आदि खाने को न दें, उसे कम से कम एक सप्ताह तक दूध+दलिया पर ही रखना चाहिए अन्यथा रोग फिर से हो जाता है और घातक स्थिति पैदा कर देता है जिससे पशु की मृत्यु हो जाती है। उपचार हेतु उच्चशक्ति वाले एन्टीबायोटिक (एम्पीसीलीन, सेफटीयाजान या टैजोवेक्टम) की सूई कार्टिजो समूह की दवा के साथ लगवायें।

2. **लंगड़ा बुखार/ब्लैक क्वार्टर/जहरवादः**

**पहचानः** पशु सुस्त हो जाता है, जुगाली करना बन्द कर देता है। उसे तेज बुखार (107-108°F) हो जाता है। पशु के पिछले क्वार्टर में या अगले पैर के ऊपरी भाग के कंधे तक का क्षेत्र गर्म, कड़ी, दर्दयुक्त सूजन तथा तीव्र लंगड़ेपन के साथ–साथ कभी सूजन सीने तथा गर्दन तक भी बढ़ जाता है। पशु रम्भाता और दांत पीसता है। सूजन जल्दी–जल्दी बढ़ने लगती है और हाथ से छूने पर गर्म होती है और दबाने पर गड्ढ़ा पड़ जाता है और चुर–चुर की आवाज सुनाई पड़ती है और बालू जैसा अनुभव होता है। यदि इस सूजन पर चीरा लगाया जाय तो इसमें से काले रंग का झागदार, सड़े

मक्खन जैसी बदबूदार खून निकलता है। पशु प्रायः बीमार होने के 12 से 48 घंटे में मर जाता है। भेड़वशीय पशु में इन लक्षणों के अलावे नथुनों और गुदाद्वार से रक्तयुक्त स्राव भी आने लगता है।

**बचाव एवं उपचारः** इस रोग से बचाव हेतु बरसात शुरू होने से पहले स्वस्थ्य पशुओं को टीका (B.Q. Vaccine) 5 मि0ली0 की मात्रा में त्वचा के नीचे लगवा देना चाहिए। पेनिसिलन, एम्पीसिलीन, क्लौक्सासिलीन एवं एमौक्सिलीलीन कारगार दवा है।

3. **संक्रामक गर्भपात (Contagious Abortion) या ब्रूसेल्लोसिसः**

**पहचानः** मादा पशुओं, विशेषकर गाय, भैंसों को होता है। इसमें गर्भित पशु का गर्भाशय सूजकर उसमें उपस्थित भ्रूण का पूरी अवधि पाने के पूर्व ही गिर जाता है। गाय–भैंसों में प्रायः 5वें से 8वें माह तक ही उनका गर्भ गिर जाया करता है। सबसे पहले पशु को तेज बुखार हो जाता है, सुस्त, बैचैनी, शारीरिक निर्बलता, भूख की कमी, कष्टप्रद श्वास आदि लक्षण होते हैं। गर्भपात होने से पूर्व भग में सूजन आकर उससे बादामी रंग का स्राव आता है।

**बचाव एवं उपचारः** ब्रूसेला स्ट्रेन 19 वैक्सीन का 5 मि0ली0 त्वचा मार्ग से सिर्फ प्रभावित गौशाला में मादा पशुओं को लगाना चाहिए। गिरे हुए भ्रूण, जेर तथा उसके सम्पर्क में आये हुए सभी पदार्थो को जला देना चाहिए। अथवा गहरे गड्ढे में डालकर ऊपर से चूना डालकर नष्ट कर देना चाहिए। प्रभावित गौशाला में रोग से बचाव का टीका 4–8 माह की आयु में ही बच्चों को लगवा देना ठीक रहता है।

4. **थनैला रोग/मैस्टाइटिस (Mastitis):**

**पहचानः** पशु बेचैइनी अनुभव करता है, आहार कम लेता है, पशु को बुखार हो जाता है। अयन गर्म, लाल तथा दर्दमय हो जाता है। बाद में सुस्ती बढ़ जाती है और टेम्परेचर गिर जाता है। इस समय अयन कड़ा और सख्त हो जाता है एकाएक थनों में दूध आना कम हो जाता है। दूध में छिछड़े तथा कुछ पीलापन बाद में लाल रंग और पतला लिए होता है। रोग का वेग अधिक होने पर गाय दूध देना बन्द कर देती है या प्रभावित क्वार्टर का दूध सूख जाता है।

**बचाव एवं उपचारः** रोगग्रसित सूजे हुए अयन पर गरम पानी में मैगसल्फ (मीठा सोडा), बोरिक एसिड तथा नीम की पत्तियाँ डालकर अयन को सेंका जा सकता है और आयोडिन/आयोडेक्स मरहम लगाने से लाभकर होता है। इसके साथ ही साथ थन से सम्पूर्ण दूध निकालने से बाद थन के अन्दर चढ़ाने के लिए एण्टीबायोटिक बाजारों में उपलब्ध है जो इस रोग में रामबाण सिद्ध हुई है। जैसे– पेन्डिस्ट्रीन/नेफ्यूरान/पेनिसिलीन/मैस्टेलोन या स्ट्रिपेन फोर्ट आदि इण्ट्रामैमरी ट्यूबों को नली के नॉजल को थन नली में प्रविष्ट करके इनमें की सारी औषधि थन में चढ़ा दी जाती है। आवश्यकतानुसार 12–24 घंटे बाद दुबारा औषधि चढ़ाई जा सकती है।

5. **नेबेल इलः**

**लक्ष्मणः** जोड़ों तथा बदन के अन्य भागों पर विशेषकर नाभी पर जगह–जगह पीब पड़ जाता है। और 103–105 डि0फा0 तक बुखार हो जाता है। धीरे–धीरे बच्चे को कमजोरी महसूस होती है और 2–3 सप्ताह के अन्दर बच्चा मर जाता है।

**बचाव एवं उपचारः** बच्चा पैदा होने के समय नाल को न्यू ब्लेड से काटकर एण्टीसेप्टिक लोशन जैसे– बेटाडीन लगाकर ड्रेसिंग कर देनी चाहिए।

रोग हो जाने पर पशु को एण्टीबायोटिक एवं सल्फा ड्रग्स देनी चाहिए। जहाँ पर सुजन आ गई हो और यदि पस पड़ गया हो तो उस जगह का ऑपरेशन करके एण्टीसेप्टिक से ड्रेसिंग कर देनी चाहिए।

6. **काफ स्कावर्स/बच्चों के सफेद दस्त नामक बीमारीः** गाय/भैंस के नवजात बच्चों का रोग है जिसमें पशु को तीव्र दस्त होता है तथा लड़खड़ा कर गिर जाता है। इस रोग का प्रकोप भैंस के बच्चों में सर्वाधिक देखने को मिलता है, परन्तु यह मेमनों एवं शूकर के बच्चों को भी प्रभावित कर सकता है। इस रोग का कारण Escherichia Coli नामक जीवाणु है। बीमारी पैदा होने के 10 दिन के अन्दर बहुत अधिक होती है पर कभी–कभी 3 माह के उम्र तक हो सकता है। यह बीमारी उन्हीं जानवरों को होती है जो पैदा होने के समय कमजोर होते हैं, ठीक समय पर दूध नहीं दिया जाता तथा दूध पिलाने में

सफाई नहीं रखी जाती। इस रोग का लक्षण यह है कि बच्चों को सफेद या मटमैला पतला दस्त आता है और रोगी बहुत कमजोर हो जाता है बच्चा कुछ घंटों से लेकर 48 घंटे के अन्दर मर जाता है। तापक्रम सब नार्मल हो जाता है। बाल रूखें हो जाते हैं आँखें गड्ढ़े में चली जाती है। इस बीमारी का उपचार एण्टीबायोटिक दवा जैसे– Streptomycin/Terramycin लाभकारी है साथ ही शरीर में पानी की कमी हो गई हो तो नार्मल सैलाइन सोल्यूशन तथा ग्लूकोज सोल्यूशन देना चाहिए एवं Metronidazole/Legeramide आदि दवा काफी लाभप्रद है। साथ में Conciplex और Vit.A चार दिन तक मांस में सूई लगाना चाहिए। खाने में Liquid diet दी जा सकती है।

7. इन्टरोटॉक्सीमिया इसे पल्पी किडनी डिजीज भी कहते हैं यह तीब्र गति से फैलने वाला मेमनों एवं भेड़ों का रोग है, जिसमें भेड़ों की अचानक मृत्यु हो जाती है। यह रोग क्लास्ट्रीडियम बेल्चिआई टाइप डी, टॉक्सिन से उत्पन्न होता है। यह टॉक्सिन मेमनों में पल्पी किडनी डिजीज तथा व्यस्क बकरी, भेड़ों में इन्टेरोटॉक्सीमिया रोग उत्पन्न करता है। इस रोग में पशु के आँखों से आँसू आते हैं। मुँह से लार बहती है। जबड़े की चैम्पिंग, श्वास कष्ट के साथ–साथ, रसयुक्त मल का निकलना प्रारंभ हो जाता है। पशु अगले पैरों से घुटनों के बल चलने लगता है। कभी–कभी मेमने जोरों से पैर पीटते हैं, छटपटाते हैं और बड़ी जोर से भाग कर गिर जाते हैं। मरने के बाद पशु शीघ्र सड़ने लगता है।

   इस रोग से बचाव हेतु इन्टेरोटॉक्सीमिया वैक्सीन का प्रयोग वर्षा ऋतु प्रारंभ होने से पूर्व करते हैं, जिन पशुओं में इसे पहली बार लगाया जा रहा है, उनमें इसको 2.5 एम0एल0 S/C विधि से देते हैं एवं दो–तीन सप्ताह के बाद पुनः इसी मात्रा में देते हैं।

## विषाणु जनित रोगः

1. **अढ़ैया या इफीमेरल फीवरः** यह एक ज्वार संबंधी गाय–भैंस की बीमारी है, जिसमें पशु को एकाएक तीव्र ज्वर हो जाता है (105–106 डि0फा0), पशु हॉफने लगता है, खॅसी होता है, अधिकांश केसिस में पागुर करना बन्द कर देता है, एक या अधिक पैर जाम हो जाता है। पैरों में लगड़ाहट एवं थरथराहट होता है। यह खासकर वर्षा ऋतु में होता है एवं बीमारी की अवधि 1–3 दिन तक की रहती है।

   यदि पशु को कोई दवा न भी दी जाय तो भी पशु प्रायः तीन दिन बाद स्वस्थ्य हो जाता है। लेकिन जरूरत पड़ने पर सल्फाडायमिडीन या ऑक्सीटेट्रासाइक्लीन के साथ पैरासिटामोल एवं एविल मॉसपेशीगत में सूई देना चाहिए।

2. **रेबीज (पागल कुत्ते का काटना):** यह रोग एक छूत वाला रोग है। विशेष रूप से यह रोग कुत्ते, गीदड़, बिल्ली एवं जंगली मांसाहारी पशुओं को होता है। सामान्य रूप से रोगग्रस्त पशुओं द्वारा काटे जाने पर अन्य पशुओं एवं मनुष्यों को होता है। मनुष्यों में यह रोग केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव डालता है, जिससे मानसिक बुद्धि एवं भावना उत्तेजित होकर रोगी व्याकुल हो जाता है। रोगी अन्त में शक्तिहीन, पक्षाघात या लकवाग्रस्त होकर मृत्यु का शिकार बन जाता है। इस रोग के विषाणु सर्वाधिक रूप में बीमार पशु के लार में पाया जाता है एवं रक्त तथा दूध में सबसे कम पाया जाता है।

   इस रोग की अवधि कुत्तों में तीन से छः सप्ताह, जो एक वर्ष तक का भी हो सकता है, गाय/भैंस में 4–8 सप्ताह, भेड़/शूकर में 3–6 सप्ताह तक एवं मनुष्यों में 14–90 दिन तक का होता है।

   इस रोग से पशुओं का लार संसर्गिक होता है। रोगी पशुओं के लार में रहने वाले विषाणु उसके चाटने, काटने पर त्वचा, मांस तथा तंत्रिका में प्रवेश करते हैं।

   रैबीज के लक्षण दो रूप में होता है, गाय–भैंस जाति के पशुओं में पहले रूप में प्रचण्ड रूप (Furious form) में पशु बेचैन होता है और धबराता है। वह अपने मालिक को मारने के लिए दौड़ता है। सिर ऊँचा तथा अकड़ा रहता है। ऊपर वाली थूथनी को ऊपर उठाता है। पाँव तथा खुर से जमीन खोदता है। दीवार में सिर मारता है तथा भयानक आवाज निकालता है। मुँह से झागयुक्त लार आता है। पशु आहार चबाने एव निगलने में कष्ट का अनुभव करता है। खाना, पीना छोड़ देता है। अन्त में पिछले धड़ की शक्ति समाप्त हो जाती है और पैरालिसिस होकर तीन से छः दिन में मर जाता है।

दूसरे रूप में मूक रूप (Paralytic form) इस अवस्था में पशु चुपचाप रहता है। उसे भोजन तथा निगलने में कष्ट होता है। पिछले धड़ का पैरालिसिस हो जाता है। मुँह से लार टपकता है। जानवर बुरी तरह भयानक आवाज निकालता है तथा एक सप्ताह में पशु मर जाता है।

**रैबीज के उपचार एवं रोकथामः**

रैबीज वाले कुत्ते के काटने वाले स्थान को तत्काल पानी एवं साबुन से अच्छी तरह से धो डालना चाहिए। यदि काटने के 10–15 मिनट के अन्दर धो दिया जाये तो रोग होने की संभावना नहीं के बराबर होती है। विषाणु की वृद्धि को रोकने हेतु काटे हुए धाव को तुरन्त सोडावाईकार्ब के लोशन से धोयें या कार्बोलिक एसिड या नाइट्रिक एसिड से जला देना चाहिए।

रोग से बचने के लिए वैक्सीन लगाया जाता है 1 एम0एल0 चमड़े या मांस में काटने के दिन, फिर तीसरे, सातवें, चौदहवें, तीसवें और नब्बेवाँ दिन दिया जाता है। इसका टीका राबिसीन/Rabguard या रक्षारैब के नाम से बाजारों में उपलब्ध है। इस रोग के लक्षण आ जाने के बाद पशु को बचाना मुश्किल है लेकिन पेनिसिलीन/प्रोकेन पेनिसिलीन/एम्पीसिलीन किसी एक एण्टीबायोटिक्स की सूई लगाते रहना चाहिए।